

Ykl chu

fdLea

- , l oh , e&1 ऐन्गुलर लीफ स्पार्ट रोग प्रतिरोधी, लम्बी बेल वाली किस्म, फलियां 13–14 सें.मी. लम्बी, गोल, 8 से 10 भूरे रंग के चमकीले बीज प्रति फली, 65 दिन में तैयार, हरी फलियों की औसत उपज 100–125 किंवटल प्रति हैक्टेयर (8–10 किंवटल प्रति बीघा), सभी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।
- i hfe; j बौनी किस्म, हरे रंग की कोमल, चपटी, 13 सें.मी. लम्बी फली, 55 दिन में पककर तैयार, हरी फलियों की औसत उपज 75–100 किंवटल प्रति हैक्टेयर (6–8 किंवटल प्रति बीघा), निचले तथा मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।
- d&UMj बौनी किस्म, 14 सें.मी. लम्बी फली, थोड़ी मुड़ी हुई, 40–50 दिन में पककर तैयार, हरी फलियों की औसत उपज 75–100 किंवटल प्रति हैक्टेयर (6–8 किंवटल प्रति बीघा), निचले तथा मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।
- d&Vdh oUMj लम्बी, बेल वाली किस्म, फलियां 20 सें.मी. लम्बी, मुड़ी हुई, कोमल, 65 दिन में तैयार, हरी फलियों की औसत उपज 100–125 किंवटल प्रति हैक्टेयर (8–10 किंवटल प्रति बीघा), निचले तथा मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।
- y{eh (i h&37) लम्बी बेल वाली, अत्याधिक उपज देने वाली किस्म, 3 फली प्रति गुच्छा, 13.5 सें.मी. लम्बी, आकर्षक, हरी, रेशाविहीन फली, 65–70 दिन में पककर तैयार, हरी फलियों की औसत उपज 160 किंवटल प्रति हैक्टेयर (13 किंवटल प्रति बीघा), बीज सफेद हल्के पीले रंग की धारियों वाला, मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।
- oh , y ck&uh&1 बौनी किस्म, हल्के रंग की गोलाकार, थोड़ी मुड़ी हुई रेशाविहीन फलियां, 50–55 दिन में तैयार, औसत उपज 90–100 किंवटल प्रति हैक्टेयर (7–8 किंवटल प्रति बीघा), मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।
- i k i ko&rh बौनी किस्म, हरी, भरी हुई, रेशाविहीन, 15–18 सें.मी. लम्बी फलियां, 50 दिन में पककर तैयार, बीज हल्के भूरे रंग का, मोजैक तथा पाऊंडरी मिल्ड्यू रोग प्रतिरोधी किस्म, औसत उपज 100–125 किंवटल प्रति हैक्टेयर (8–10 किंवटल प्रति बीघा), मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।

vdkl dkey राष्ट्रीय स्तर पर पहले ही अनुमोदित बौनी किस्म, पूसा पार्वती तथा कंटेन्डर किस्मों से क्रमशः 16.1 तथा 11.3 प्रतिशत अधिक पैदावार, फलियां सीधी, रेशे रहित, मांसल तथा एन्थ्रेक्नोज रोग अवरोधी, में बौनी फ्रासबीन उत्पादन में विविधता लाने के लिए अनुमोदित किस्म।

cqkbl dk l e;	निचले पर्वतीय क्षेत्र	फरवरी-मार्च और अगस्त-सितम्बर
	मध्य पर्वतीय क्षेत्र	मार्च-जुलाई
	ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र	अप्रैल-जून

chl dh ek=k	ifr gDV\$ j	ifr ch?kk
बौनी किस्में	75 कि.ग्रा.	6.0 कि.ग्रा.
लम्बी बेल वाली किस्में	30 कि.ग्रा.	2.5 कि.ग्रा.

vllrj	बौनी किस्म	45X15 सें.मी.
	लम्बी बेल वाली किस्म	90X15 सें.मी.

[kkn , oa mo] d

	ifr gDV\$ j	ifr ch?kk
गोबर की खाद	200 किंवटल	16 किंवटल
कैन	200 कि.ग्रा.	16 कि.ग्रा.
सुपर फॉस्फेट	625 कि.ग्रा.	50 कि.ग्रा.
म्यूरेंट ऑफ पोटाश	85 कि.ग्रा.	7 कि.ग्रा.

गोबर की खाद, सुपर फॉस्फेट तथा म्यूरेंट ऑफ पोटाश की कुल मात्रा तथा कैन का आध भाग खेत तैयार करते समय मिट्टी में मिला दें। शेष कैन की बची हुई मात्रा पौधों को मिट्टी चढ़ाते समय डाल दें।

vll; l L; fØ; k, a

फ्रासबीन की खेती से अधिक आमदनी लेने के लिए मक्की तथा बेल वाली किस्मों को 2:2 के अनुपात में कतारों में लगायें। इससे झांभों की आवश्यकता नहीं पड़ती।

अधिक पैदावार के लिए बीजाई के दो से तीन सप्ताह के बाद तथा फूल आने से पहले की अवस्था में दो बार हाथों से निराई-गुड़ाई करें।

'kq'd 'khrk\$.k {ks=ka ea canxk\$kh \$ Ykl chu dh fefJr [krrh dj\$A

cht mRiknu

बीज उत्पादन सामान्य फसल सा ही है। बीज फसल का अन्य खेतों से लगभग 25 मीटर का फासला रखें तभी $\frac{1}{4}$ बीज प्राप्त किया जा सकता है। विशिष्ट गुण वाली तथा स्वस्थ फलियों से ही बीज लिया जाता है। जब अधिकांश फलियां पककर पीली पड़ने लगे तब सूखी फलियों को तोड़ें। दो सप्ताह रखने के पश्चात् इन फलियों को डण्डों से पीटकर या बैलों द्वारा गहाई करके बीज निकालें। ध्यान रहे कि बीज टूटे नहीं। बीज को सुखाकर तथा साफ करके सुरक्षित बर्तनों में भण्डारित करें।

cht i kflr

बौनी किस्में :	10—12 किंवटल/हैक्टेयर (80—95 कि.ग्रा./बीघा)-
बेली वाली किस्में :	12—18 किंवटल/हैक्टेयर (95—145 कि.ग्रा./बीघा)